Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-2; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 06-09

©2026 **Sanvahak**

https:// sanvahak.gyanvividha.com

Author's:

1. डॉ. कंचन

शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, स्वामी करपात्री जी महाराज राजकीय पीजी कॉलेज, रानीगंज, प्रतापगढ़.

2. दीपिका तिवारी

शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, प्रोफेसर राजेंद्र सिंह (रज्जूभय्या) यूनिवर्सिटी, नैनी, प्रयागराज.

Corresponding Author :

दीपिका तिवारी

शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, प्रोफेसर राजेंद्र सिंह (रज्जूभय्या) यूनिवर्सिटी, नैनी, प्रयागराज.

सोशल मीडिया की आवश्यकता एवं महत्त्व तथा इसके कार्य : (ग्रामीण समाज में इसकी प्रभावशीलता का अध्ययन)

शब्द कुंजी–सोशल मीडिया, ग्रामीण समाज, आवश्यकता, महत्व, कार्य

सारांश - प्रस्तुत शोध पत्र में समाज (ग्रामीण समाज) में सोशल मीडिया की आवश्यकता, महत्वएवं इसके कार्यों का उल्लेख किया है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया से जुड़े मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए इसकी प्रभाव शीलता का अध्ययन किया जा रहा है।

प्रस्तावना- 21वीं सदी का समकालीन युग डिजिटल क्रांति का युग है, जिसमें सूचना एवं संचार की गति ने अभूतपूर्व स्तर प्राप्त कर लिया है। इस परिवर्तन के केंद्र में सोशल मीडिया एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम के रूप में उभरा है, जिसने संचार, ज्ञान, सूचना, सहभागिता और सामाजिक संबंधों की पूरी संरचना को परिवर्तित कर दिया है। विशेष रूप से ग्रामीण समाज, जो सदियों से संचार-वंचना, सीमित सूचना-सुगमता, तथा तकनीकी पिछड़ेपन का सामना करता आया है, सोशल मीडिया के आगमन से तीव्र परिवर्तन की प्रक्रिया में प्रवेश कर चुका है। आज ग्रामीण समुदाय सूचना, शिक्षा, कृषि- ज्ञान, मौसम पूर्वानुमान, रोजगार, स्वास्थ्य सचेतना, सरकारी योजनाओं की जानकारी और सामाजिक सहभागिता के लिए सोशल मीडिया का उपयोग बड़ी संख्या में कर रहे हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया ग्रामीण विकास, सामाजिक एकीकरण, सूचना-लोकतंत्रीकरण और ज्ञान-विस्तार में एक महत्त्वपूर्ण उत्प्रेरक की भूमिका निभा रहा है।

सोशल मीडिया: संकल्पना एवं परिभाषाएँ- सोशल मीडिया उन डिजिटल प्लेटफॉर्मों का समूह है जो उपयोगकर्ताओं को- सूचना का निर्माण, साझा करना, संवाद करना, सहभागिता करना, तथा सामाजिक नेटवर्क विकसित करने की सुविधा प्रदान करते हैं। यह पारंपरिक मीडिया के विपरीत द्वि-मार्गीय संचार प्रणाली है, जहाँ उपयोगकर्ता न केवल सूचना प्राप्त करते हैं बल्कि स्वयं भी सूचना निर्माण में सक्रिय भाग

लेते हैं।

कास्टेल्स (2015) के अनुसार- "सोशल मीडिया आधुनिक नेटवर्क समाज का वह तंत्र है, जो संचार और सूचना की शक्ति को व्यक्तियों तथा समुदायों तक स्थानांतरित करता है।

एलिसन एवं बॉयड (2010)- "सोशल नेटवर्किंग साइटें ऐसी ऑनलाइन प्रणालियों हैं, जहाँ व्यक्ति डिजिटल पहचान बनाते हैं तथा सामाजिक संबंधों के नेटवर्क का निर्माण करते हैं। भारतीय समाजशास्त्रियों के अनुसार, सोशल मीडिया "ज्ञान एवं सूचना का वह व्यापक माध्यम है जो ग्रामीण-शहरी, भाषायी और आर्थिक असमानता को पाटता है।

सोशल मीडिया की आवश्यकता-

ग्रामीण भारत में सोशल मीडिया की आवश्यकता- अनेक कारणों से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है-

• संचार-वंचना को दूर करने की आवश्यकता- ग्रामीण क्षेत्रों में लंबे समय तक- परिवहन और संचार का थीमा विकास सीमित मीडिया पहुंच अख़बार टीवी कवरेज की कमी स्थानीय सूचना तंत्र का अभाव देखा गया है। सोशल मीडिया इस सूचना असमानता को काफी हद तक समाप्त किया है। अब गाँव का व्यक्ति- तुरंत सूचना प्राप्त कर सकता है प्रशासन या पंचायत तक शिकायत पहुँचा सकता है सामाजिक मुद्दों पर चर्चा कर सकता है जिससे संचार-लोकतंत्रीकरण बढ़ा है।

• कृषि आधारित जीवनशैली में अद्यतन जानकारी की आवश्यकता- भारत का ग्रामीण समाज मूलतः कृषि-प्रधान है। किसानों को कृषि संबंधी अनेक जानकारियों की तुरंत आवश्यकता होती है, जैसे- मौसम भविष्यवाणी मंडी भाव फसल रोग कीट प्रबंधन बीज, उर्वरक, सिंचाई तकनीक सरकारी कृषि योजनाएँ सोशल मीडिया के माध्यम से किसान अब कृषि विशेषज्ञों, कृषि विश्वविद्यालयों और सरकारी एजेंसियों से सीधे जुड़ते हैं, जिससे ज्ञान का प्रसार सहज हुआ है।

• शिक्षा के क्षेत्र में सोशल मीडिया की आवश्यकता- ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा-संबंधी संरचनाएँ प्रायः कमजोर रहती है। सोशल मीडिया- वीडियो-आधारित शिक्षा मुफ्त अध्ययन सामग्री प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन भाषा आधारित शिक्षण ऑनलाइन ट्यूटोरियल द्वारा ग्रामीण छात्रों को नया शैक्षणिक अवसर प्रदान कर रहा है।

• सरकारी योजनाओं की जानकारी हेतु आवश्यकता- ग्रामीण समुदाय अक्सर योजनाओं की जानकारी के अभाव में लाभ से वंचित रह जाते थे। परंतु आज व्हाट्सएप समूह, फेसबुक पेज और यूट्यूब चैनलों द्वारा पीएम किसान उज्ज्वला योजना अलध, आयुष्मान भारत, मनरेगा, आवास योजना, मुद्रा लोन आदि की जानकारी सहज रूप से पहुँच रही है।

• सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता- सोशल मीडिया ने स्वच्छता, स्वास्थ्य, टीकाकरण, पोषण, लैंगिक समानता, महिला सुरक्षा, जल संरक्षण जैसे मुद्दों पर व्यापक जागरूकता उत्पन्न की है।

• ग्रामीण युवाओं के लिए अवसरों की आवश्यकता- आज ग्रामीण युवक सोशल मीडिया की मदद से डिजिटल उद्यमिता ऑनलाइन मार्केटिंग स्किल डेवलपमेंट घर-आधारित आजीविका रोजगार सूचना प्राप्त कर रहे है।

सोशल मीडिया का महत्त्व- ग्रामीण समाज में सोशल मीडिया के महत्व को इस तरह से समझ सकते हैं-

A. सामाजिक महत्त्व- सामाजिक नेटवर्क का विस्तार सोशल मीडिया ने गाँव के सीमित सामुदायिक दायरे को विस्तृत किया है। अब ग्रामीण लोग बाहरी दुनिया से जुड़े सामाजिक पूँजी का निर्माण किया विभिन्न समुदायों के संपर्क में आए यह सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाता है।

सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन ग्रामीण युवा अब वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समानता का भाव, महिला सम्मान, स्वास्थ्य चेतना, सामाजिक मुद्दों पर संवेदनशीलता की ओर उन्मुख हो रहे हैं।

B. आर्थिक महत्त्व- डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने ई-मार्केट कृषि-उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री डिजिटल भुगतान ग्रामीण उद्यमिता को नई दिशा दी है।महिला सम्मान स्वास्थ्य चेतना सामाजिक मुद्दों पर संवेदनशीलता की ओर उन्मुख हो रहे

हैं।

C. शैक्षणिक महत्त्व- डिजिटल संसाधनों ने ग्रामीण छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं नए ज्ञान तक पहुँच को सरल बनाया है। अब लोग सोशल मीडिया के जरिए शैक्षणिक क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त कर अपने ज्ञान एवं कौशल की साझेदारी को निरन्तर बढ़ावा दे रहे है।

D. राजनीतिक महत्त्व- पंचायत चुनाव, पारदर्शिता, प्रशासनिक जवाबदेही और राजनीतिक जागरूकता में सोशल मीहिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है"।

E. सांस्कृतिक महत्त्व- लोककला, हस्तशिल्प, लोकगीत और संस्कृति डिजिटल मंचों पर व्यापक पहचान प्राप्त कर रहे हैं।

सोशल मीडिया के कार्य- सोशल मीडिया की आवश्यकता और महत्व की इस व्यापक समीक्षा ने प्रदर्शित किया है कि ये प्लेटफ़ॉर्म मनोरंजन या तुच्छ उद्देश्यों से भी ऊपर कार्य करते हैं। ये प्लेटफार्म मानव गतिविधि, सामाजिक संगठन, आर्थिक आदान-प्रदान, सूचना वितरण और समकालीन समाज में नागरिक भागीदारी के विविध रूपों का समर्थन करने वाले मौलिक बुनियादी ढांचे के रूप में कार्य करते हैं। सोशल मीडिया तकनीकी अफोर्डेंस के माध्यम से कनेक्शन, अभिव्यक्ति, सूचना और समुदाय के लिए मौलिक मानवीय जरूरतों को संबोधित करता है जो संचार और बातचीत के अभूतपूर्व पैमाने और दायरे को सक्षम करते हुए दूरी, समय और लागत की बाधाओं को कम करता है। संचार, सूचना प्रसार, सामग्री निर्माण, सामुदायिक गठन और विभिन्न डोमेन-विशिष्ट अनुप्रयोगों में फैले सोशल मीडिया के मुख्य कार्य व्यक्तिगत जीवन, पेशेवर गतिविधि, शैक्षिक अभ्यास, वाणिज्यिक संचालन और लगभग सभी आबादी और संदर्भों में नागरिक जुड़ाव में गहराई से एकीकृत हो गए हैं। सोशल मीडिया का महत्व किसी एक कार्य या लाभ से नहीं है, बल्कि सुलभ, नेटवर्क वाले प्लेटफार्मों के भीतर कई क्षमताओं के अभिसरण से उपजा है जो नेटवर्क प्रभावों, विविध कार्यों के एकीकरण और उपयोगकर्ता की जरूरतों और तकनीकी संभावनाओं का जवाब देने वाले निरंतर नवाचार के माध्यम से मूल्य बनाते हैं। व्यक्तियों के लिए, सोशल मीडिया दूरियों में संबंध बनाए रखने, पहचान अभिव्यक्ति और अन्वेषण, भावनात्मक समर्थन पहुंच, सूचना अधिग्रहण, रचनात्मक आउटलेट, मनोरंजन की खपत, और स्थानीय से वैश्विक स्तर तक फैले समुदायों और बातचीत में भागीदारी को सक्षम बनाता है। संगठनों के लिए, सोशल मीडिया विपणन, ग्राहक जुड़ाव, ब्रांड प्रबंधन, कर्मचारी संचार, ज्ञान साझा करने और अनगिनत अन्य परिचालन कार्यों के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा प्रदान करता है जो वैकल्पिक संवर्द्धन के बजाय प्रतिस्पर्धी आवश्यकताएं बन गए हैं। समाजों के लिए, सोशल मीडिया लोकतांत्रिक भागीदारी, नागरिक लामबंदी, विविध आवाज प्रवर्धन, सूचना लोकतंत्रीकरण और सामूहिक कार्रवाई के लिए संभावनाएं पैदा करता है, जबकि सूचना की गुणवत्ता, गोपनीयता संरक्षण, मानसिक स्वास्थ्य और लोकतांत्रिक प्रवचन के लिए चुनौतियां भी पेश करता है।

निष्कर्ष- ग्रामीण समाज में सोशल मीडिया की आवश्यकता, महत्व एवं इसके कार्यों को समझने के लिए इन प्लेटफार्मों द्वारा प्रस्तुत महत्वपूर्ण लाभों और महत्वपूर्ण चुनौतियों दोनों को पहचानना आवश्यक है। वहीं तकनीकी सामर्थ्य जो लाभकारी कार्यों को सक्षम करते हैं, गोपनीयता उल्लंघन, गलत सूचना प्रसार, मानसिक स्वास्थ्य प्रभाव, हेरफेर और ध्रुवीकरण के जोखिम भी पैदा करते हैं जिनके लिए निरंतर ध्यान, महत्वपूर्ण जुड़ाव और विचारशील शासन की आवश्यकता होती है। सोशल मीडिया का महत्व गैर-आलोचनात्मक अपनाने में नहीं है, बल्कि सूचित जुड़ाव में है जो व्यक्तिगत साक्षरता, प्लेटफॉर्म जिम्मेदारी, नियामक निरीक्षण और सामूहिक मानदंड विकास के माध्यम से नुकसान को कम करते हुए लाभ को अधिकतम करता है। जैसे-जैसे सोशल मीडिया तकनीकी नवाचार, बदलते उपयोगकर्ता प्रभावों, उभरते प्लेटफार्मों और बदलते सामाजिक संदर्भों के माध्यम से विकसित हो रहा है, इसका मौलिक महत्व विशिष्ट प्लेटफ़ॉर्म, सुविधाओं और उपयोग पैटर्न में बदलाव के बावजूद भी बने रहने की संभावना है। कनेक्शन,

अभिव्यक्ति, सूचना और समुदाय के लिए अंतर्निहित आवश्यकताएं जो सोशल मीडिया को संबोधित करती हैं, तकनीकी परिवर्तनों में स्थिर रहती हैं। यह सुझाव देते हुए कि सोशल मीडिया बुनियादी ढांचे का कुछ रूप निकट भविष्य के लिए मानव जीवन के लिए केंद्रीय रहेगा। इसलिए सोशल मीडिया की जरूरतों, कार्यों, महत्व और निहितार्थों की परिष्कृत समझ विकसित करना समकालीन समाज (ग्रामीण समाज) को नेविगेट करने और डिजिटल युग के जीवन में प्रभावी ढंग से भाग लेने के लिए आवश्यक साक्षरता का प्रतिनिधित्व करता है। अंततः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया का प्रभाव ग्रामीण समाज में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार से विद्यमान है। इसके अनेक परिणाम ग्रामीण समाज में नकारात्मक स्थिति में भी देखे जा रहे हैं और सकारात्मक रूप से भी यह सक्रिय है। हालांकि ग्रामीण समाज में इसकी उपयोगिता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, लोगों के लिए महत्वपूर्ण होता जा रहा है। इसके उपयोग से ग्रामीण लोगों का जीवन प्रभावित देखा जा रहा है।

सन्दर्भ सूची :

1. आर. के. (2019) भारतीय समाज और डिजिटल परिवर्तन अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. लवानिया, एम. एम. (2018) ग्रामीण संचार एवं समाज, शोध प्रकाशन, जयपुर।
3. वाई. के. (2004) भारतीय किसान की स्थिति. एके मिश्रा फाउंडेशन, नई दिल्ली।
4. चावला, एन. के. (2004) ग्रामीण शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन मिश्रा फाउंडेशन,
   भारत सरकार (2022) डिजिटल इंडिया रिपोर्ट सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली।
5. देसाई, ए. आर. (2009) भारत में सामाजिक परिवर्तन, पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई।
6. सिंह, सुरजीत (2020) ग्रामीण युवाओं में डिजिटल उद्यमिता. यूनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर।
7. शफील्ड, रॉबर्ट (1955). ग्रामीण और आदिम समाज का अध्ययन, शिक्ागी यूनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो।
8. सिंह, जे. पी. एवं कुमप, एस. (2015) सामाजिक परिवर्तन और मीडिया नेशनल पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
9. तिजोरीवाला, एम. (2017) ग्रामीण अर्थव्यवस्था और डिजिटल बाज़ार एशियन बुक्स, नई दिल्ली।
10. गुप्ता, ए. एवं शर्मा, एस. (2011). डिजिटल शिक्षा अवसर और चुनौतियों रावत पहिलकेशन्स, जयपुर।
11. माथुर, एन. (2016). भारतीय राजनीति और सोशल मीडिया, प्रिंटवेल, जयपुर।
12. दास, शशि (2014). भारतीय लोकसंस्कृति और मीडिया प्रभात पत्रिकेशन, दिल्ली।
13. कास्टेल्स, मैनुअल (2015) नेटवर्क सोसाइटी और डिजिटल कम्युनिकेशन ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
14. जैन, पी.सी. (2021). ग्रामीण समाजशास्त्र भारतीय परिप्रेक्ष्य, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
15. बॉयड, डेना एवं एलिसन, निकोन (2010) सोशल नेटवर्क साइट्स का अध्ययन, एमआईटी प्रेस, कैम्ब्रिज।

•